साहित्य में नारी विमर्श: विशेष संदर्भ- यशपाल की कहानियों में नारी

डॉ. वैशाली वाय. पटेल
एडहोक अध्यापिका (हिंदी विभाग)
जे.पी.पारडीवाला आर्ट्स एंड कोमर्स कोलेज, किल्ला-पारडी
ता.पारडी, जि.वलसाड, गुजरात

१. प्रस्तावना

इस संसार में 'नारी' शब्द नर के समान है। इसका प्रयोग स्त्री लिंग वाची प्रतीक रुप में होता है। किंतु मानव समाज में 'नारी' शब्द इस सामान्य अर्थ में गृहित नहीं है, क्योंकि इस का स्थान नर से कहीं बढकर है। इस के लिए मैं कुछ पंक्तियाँ व्यकत करना चाहती हुँ।

"माँ बनकर जन्म दिया जिसने,
लालन-पालन भी किया जिसने,
शीश झुकाकर प्रणाम करो उस नारी को,
तुम पर एहसान किया उसने।"

मानव जीवन में स्त्री और पुरुष जीवन रथ के दो पहिये है। इन्हीं दोनों के सहारे अपने विविध पक्षों के साथ निरंतर आगे बढता रहता है। नारी जीवनदायिनी है उसके बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। साहित्य की ऐसी कोई भी विधा नहीं है जिसमें नारी का चित्रण न किया गया हो। परंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि आज भी भारतीय नारी अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष कर रही है। पुरुष ने कभी नारी को अपने बराबर का दर्जा दिया ही नहीं है। हमारे पौराणिक ग्रंथो में 'रामायण' और 'महाभारत' और पुराण कथाओं में सीता, दौपदी, मंदोदरी, अहल्या और तारा जैसी नारियों का जीवन भी कहीं-न-कहीं पीडित था। इन नारियों को लेकर कई साहित्यकारों ने उनसे संबधित समस्याओं को साहित्य में स्थान दिया है। ऐसे साहित्यकारों में यशपालजी भी है जिन्हों ने अपने कथा साहित्य में नारी की समस्याओं का वर्णन किया है।

यशपालजी हिंदी कथा-साहित्य के एक महत्वपूर्ण रचनाकार है। यशपालजी ने सभी विधाओं में सफलता पूर्वक सृजन किया है। सभी विधाओं में नारी को विशेष महत्व दिया है। उन्हों ने अपनी कहानियों में किसी-न-किसी रुप में नारी समस्या को चित्रित किया है। वे नारी चरित्रों के माध्यम से नारी पात्रों की जिजीविषा से रुढिगत भारतीय समाज की मान्यताओं पर गहरा व्यंग्य करते हुए नारी के शक्तिशाली रुप को व्यापक दृष्टि प्रदान करते है। समय-समय पर प्रकाशित और असंग्रहित कहानियों को मिलाकर २२५ से अधिक होती है। इन कहानियों में से आधी से ज्यादा काहानियाँ नारी, नारी समस्या, नारी स्वातंत्रय को लेकर लिखी गयी है।

यशपालजी ने विविध समस्याओं का वर्णन किया है उसमें विवाह और वैवाहिक जीवन की समस्याएँ, शोषित नारी की समस्याएँ, कुवाँरी माता की समस्याएँ, नारी की आर्थिक समस्याएँ, काम और यौन संबंधी समस्याएँ आदि।

इन सभी समस्याओं में मैंने विवाह और वैवाहिक जीवन से संबंधित समस्याओं पर मेरे विचार प्रकट किये है। मानव-जीवन में विवाह एक सामान्य तथा स्वाभाविक घटना है लेकिन समाज की व्यवस्था में काफी महत्वपूर्ण है। घर-परिवार बसाने के लिए स्त्री-पुरुष में आवश्यक संबंध स्थापित करने और उसमें स्थिरता लाने के लिए कोई-न-कोई संस्थात्मक व्यवस्था हर समाज में पायी जाती है, जिसे विवाह कहते है। विवाह प्रत्येक समाज की संस्कृति तथा सभ्यता का आवश्यक अंग होता है। चाहे वह आदिम समाज हो या सभ्य समाज। ऐसा हम कह सकते है कि इस संस्था का एकमात्र उदेश्य है घर-गृहस्थी बसाना तथा बच्चों के लालन-पालन के लिए एक स्थायी व्यवस्था का निर्माण करना। संसार में अब तक ऐसी मान्यताएँ थी कि नारी के लिए विवाह अनिवार्य है क्योंकि प्रजोत्पादन स्त्री का धर्म है या प्रकृतिगत कर्तव्य है। कई समाज में स्त्री का अविवाहित रहना कलंकित भी माना जाता है। इसलिए भी विवाह स्त्री के जीवन के लिए सर्वोपरी माना जाता है। लेकिन कभी-कभी यह स्थिति विकट समस्या का रुप धारण करती है। इसके कारण बहोत सारी समस्याएँ निर्मित होती है जिनका संकेत यशपाल की कहानियों में मिलता है। यह समस्याएँ है विवाह पूर्व नारी की समस्याएँ, अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह तथा उसमें उत्पन्न समस्याएँ, अनमेल विवाह की समस्याएँ, प्रेम-विवाह की समस्याएँ, विवाहोत्तर प्रेम की समस्याएँ आदि।

२. विवाह पूर्व नारी के जीवन की समस्याएँ

विवाह के लिए नारी को कितनी यातनाएँ सहनी पडती है उसका वर्णन यशपाल की कहानियों में हुआ है। 'उत्तमी की माँ' कहानी सेक्स समस्या पर आधारित है, जिसमें लेखक ने कामवासना के दमन के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया है। नारी का कुरुप होना समाज की दृष्टि में कितना बडा दोष होता है, तथा उसके परिणाम स्वरुप नारी क्या बन सकती है ? इसका चित्रण करना लेखक का उदेश्य है। नायिका उत्तमी की सगाई इसलिए टूट जाती है कि उसके मुँह पर शीतला के दाग थे। समाज में व्यक्ति की योग्यता, प्रतिभा तथा आंतरिक गुणों को देखा नहीं जाता बल्कि बाह्य सौंदर्य देखा जाता है। 'निर्वासिता' कहानी में प्रतिभाशाली इंदु को योग्य वर नहीं मिलता है क्योंकि वह सुंदर नहीं थी। लेखक लिखते है—" माता-पिता ने बेटी के लिए गृहस्थी व संसार बसाने के लिए सभी संभव यत्न किये, उन्हें सफलता न हुई। कारण अनेक थे, लडकी का पर्दे में छिपकर न रहना, माता-पिता की सम्मानित और सम्पन्न वर ढुंढने की जिद। धन के जोर पर धनी कुल पाया जा सकता है, नर शरीर भी, परंतु प्रतिभा नहीं। प्रतिभावान लडकी के लिए मालिक खरीद कर बेटी को जीवन भा के लिए नर पशु के पाँव तले डाल देना माँ-बाप को स्वीकार न था।''

३. अभिभावकों द्वारा अयोजित विवाह तथा उससे उत्पन्न समस्याएँ

हमारे समाज में जो विवाह सम्पन्न होते है उसके भी कई रुप होते है। उनमें से एक है लडकी का विवाह माँ-बाप या अभिभावकों द्वारा तय किया जाता है। विवाह को न टूटने वाला धार्मिक संस्कार माना जाता है। लेकिन अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह में जो वैवाहिक रीतियाँ होती थी उनका दुष्परिणाम भी प्राय: लडकियों को भुगतना पडता था। विवाह प्रथा की जकडन के कारण अनेक स्त्रियों को पति के अत्याचार चूप-चाप सहन करने पडते थे। 'छलिया नारी' कहानी की नंदो अपने पति के अत्याचार सहने को विवश है। उसे रात को पति की यातना सहन करनी पडती है और दिन में सास का निरादर। आखिर तंग आकर घर से भाग जाती है। पत्नी के भाग जाने पर विनोद सिंह को वियोग का दु:ख नहीं पुरुषत्व का अपमान हुआ वह दु:ख ज्यादा होता है। एक दिन एक अवसर पर विनोद सिंह ने एक नदी में बहती हुई एक स्त्री को बचाया वह नंदो ही थी। नंदो ने देखा कि उसे बचाने वाला पुरुष अपना पति ही है तो वह उसकी चुंगुल से फिर से भाग जाती

है। विनोद सिंह के द्वारा छली गयी नंदो अब पति के साथ नहीं रहना चाहती थी। उसके पति ने सुहागरात को ही नववधू नंदो को उसकी दास तथा हीन स्थिति का अनुभव करवाया था। वह परेशान हो जाती है। अंत में वह भाग जाती है। और नदी में छलांग लगा देती है। भारतीय समाज में स्त्री-पुरुषों के संबंधों की मधुरता का हिसाब लगाया जाय तो कठिनता से सों परिवारों में से दस-बीस परिवार ऐसे मिलेंगे जहाँ पत्नी सुखी हो या उनका दाम्पत्य जीवन मधुर हो। बाकी तो केवल ढोंग, दिखावा, सामाजिक परंपराओं को निभाना मात्र होता है। जब स्त्री आत्मनिर्भर नहीं होती है तो और भी मुश्किलों का सामना करना पडता है।

४. अनमेल विवाह की समस्याएँ

समाज में दहेज की समस्या प्रमुख है। इसके साथ जुडी अनमेल विवाह की समस्या है। लडकी के माँ-बाप दहेज न दे सकने के कारण विवश होकर कन्या को किसी बुढ्ढे से लडकी की शादी कर देते है। कई माँ-बाप लडकी की हिफाजत नही कर पाते और समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए लडकी से दस-पंद्रह साल बडे या बुढे व्यक्ति के साथ उसकी शादी कर देते है। यशपाल की कहानी 'औरत' में रतिया का पति बूढा है इसलिए वह जवान भोला के साथ फूसुर-फूसुर करती रहती है। उसकी मालकिन उसे लुच्ची समझकर निकाल देती है। रतिया की नैसर्गिक जरुरतो को न समझा और अन्य गुणों को भी नहीं देखा गया। 'तुमने क्यों कहा, मैं सुंदर हूँ' कहानी एक ऐसी नारी की व्यथा की कहानी है जो कामेच्छा की पूर्ति के अभाव में जीवनभर कुंठाग्रस्त बनी रहती है। कहानी में यौन प्रश्न को महत्व दिया गया है। इस कहानी में एक समृध्ध वकील दो पत्नियों का पति और पाँच बच्चों का बाप है। जिसके गले बीस वर्षीय माया बाँध दी जाती है। लेखक लिखते है "गृहस्थी सम्भालने और अपना अकेलेपन दूर करने के लिए माया को पत्नी के रुप में स्वीकार कर लिया था। शायद वे वकील की दूसरी पत्नी की मृत्यु की ही प्रतिक्षा कर रहे हो।" माया माँ बनने में असफल रहती है। वह भीतर-ही- भीतर टूटती जाती है। वह टी.बी का शिकार होती है। उसकी मुलाकात निगम नामक लडके से होती है। वह अपना सबकुछ समर्पित करना चाहती थी लेकिन निगम अस्वीकार करता है। माया के स्वासथ्य में पुन: गिरावट आती है। अगर अपने पति द्वारा माया की इच्छाओं की पूर्ति होती तो वह निगम की तरफ नहीं भटकती। हमारे समाज में अनमेल विवाह नारी के लिए अभिषाप है। क्या माया जैसी पीडित नारियों का इस संसार में अपना कुछ भी नहीं है ? क्या नैतिकता के नाम पर नारी जाति पर अत्याचार नहीं हो रहा ? इन प्रश्नों का जवाब यशपालजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से दिया है। और समाज को एक नई दिशा प्रदान की है।

५. प्रेम-विवाह की समस्याएँ

कुछ लडकियाँ ऐसी होती है जो अभिभावको द्वारा निश्चित किए हुए विवाह में विश्वास नहीं करती। वे पहले प्रेम करना चाहती है बाद में शादी। पूर्व परिचय से प्रेम-विवाह में विश्वास करती है। अभिभावकों द्वारा सम्पन्न विवाह और प्रेम-विवाह में अंतर सिर्फ इतना है कि प्रेम-विवाह में लडकी भविष्य में आनेवाले सुख-दु:खों को अपने आप झेलती है। सारी जिम्मेदारी खुद उठाते है। माता-पिता उसकी चिंता नहीं करते। साधारण मानव जब इस चक्कर में फँस जाता है या किसी न किसी ओर आकर्षित हो जाता है तो वही आकर्षण बाद में प्रेम का रुप धारण कर लेता है। अंतत: विवाह में परिणित हो जाता है। लेकिन जब विवाह नहीं होता तब उन स्त्री-पुरुषों के सम्मुख कई समस्याएँ खडी हो जाती है।

यशपालजी की कई कहानियाँ प्रेम-विवाह से संबंधित है। इन कहानियों के द्वारा उन्हों ने स्त्रियों की करुण स्थिति का निरुपण किया है। 'प्रेम का सार' कहानी की रफिया ने पति की तीस वर्ष तक प्रतिक्षा की किंतु वह

इतने सालों के बाद भी वह पति को स्वीकार नहीं कर सकी। लेखक लिखते है – ''दाँत हीन मुख देख वह उसे स्वीकार न कर सकी।'' प्यार सिर्फ भौतिक चीजों पर आधारित नहीं होता। भौतिक उपायों से उसे पाया जरुर जा सकता है। किंतु बात ऐसी नहीं है। 'समाधी की धूल' कहानी की पत्नी अपने पति का प्यार पाने में सफल नहीं हो पाती। वह कहती है—''कितनी ही बार समाधि पर अनंत श्रद्धा-प्रार्थना कर समाधि की धूल कर के कोने-कोने में रख चुकी हुँ पर उस धूल को उनके हृदय में कैसे रख पाऊँ ?'' इस कहानी में प्रतिक्षा, साहचर्य की भावना, मिलनाकांक्षा एवं संतानोत्पति की लालसा जैसी नारी की सहज स्वाभाविक प्रवृति का बडा ही मनोवैज्ञानिक एवं सूक्ष्म चित्रण किया है।

यशपाल नारी की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल देते हैं। अन्यथा नारियाँ आर्थिक रुप से कमजोर होने पर पुरुष की यातना सहने के लिए विवश होती रहेंगी। यशपाल की कई ऐसी कहानियाँ है जिसमें नारी भावना व्यक्त हुई है। ज्यादातर कहानियों में नारी स्वातंत्रय, वैवाहिक रुढियाँ, वैश्या समस्या, यौन समस्या तथा आर्थिक विषमता को विस्तार के साथ चित्रित किया है। इसके लिए जिम्मेदार जो असामाजिक तत्व है, रुढि और परंपराएँ है उनका खूलकर स्पष्ट शब्दों में विरोध किया है। नारी चित्रण के प्रति लेखक की सतर्कता उसके प्रगतिशील दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। नारी के प्रति सहानुभूति होने के कारण यशपाल के नारी पात्र त्याग, सेवा, बलिदान एवं साहस जैसे गुणों को उद्घाटित करते हैं। नारी के प्रति नया एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण देकर समाज उत्थान के कार्य में यशापाल की कहानियाँ अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है।

संदर्भ ग्रंथ

१. 'तर्क का तुफान' –निर्वासिता- यशपाल, पृ-१०
२. 'अभिशप्त- छलिया नारी'- यशपाल- पृ-३३
३. 'तुमने क्यों कहा था, मैं सुंदर हूं' –यशपाल- पृ-१४
४. 'पिंजरे की उडान'- यशपाल- पृ-३६
५. यशपाल के कहानी संग्रह-
- तर्क का तुफान, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन।
- अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ।
- तुमने क्यों कहा था, मैं सुंदर हूं, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन।
- पिंजरे की उडान'- यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ।